IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

चितौड़गढ जिले में सरस डेयरी का विकास

डॉ. संध्या पठानिया
आचार्य, भूगोल विभाग
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

सोहनलाल अहीर
शोधार्थी, भुगोल विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

सारांश : दुग्ध प्राचीनकाल से ही, जब से मानव सभ्यता पनपी है, तभी से यह मनुष्य के काम आ रहा है। दूध के उत्पाद मक्खन का उल्लेख महाभारत काल में भगवान श्रीकृष्ण के समकालीन मिलता है। भारत का दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है, जिसका श्रेय डॉ. वर्गीज कुरियन को जाता हैं, जिन्होंने श्वेत क्रान्ति की शुरूआत 1970 ई. में हुई। राजस्थान का दुग्ध उत्पादन में देश में दूसरा स्थान हैं। राजस्थान में डेयरी उद्योग का प्रारम्भ 1971 में हुआ है। राजस्थान में "राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन [RCDF] की स्थापना हुई। सरस डेयरी चितौड़गढ की स्थापना चितौड़गढ-प्रतापगढ़ दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि. का पंजीकरण 10 जून 2008 को राजस्थान कॉपरेटिव सोसायटी एक्ट 1965 के अन्तर्गत हुई।

प्रस्तुत शोधपत्र में आवश्यक सूचनाओं का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्तर पर किया गया। इसमें यह परिकल्पना की गई कि चित्तौड़गढ़ जिले में सरस डेयरी के विकास से दुग्ध उत्पादकों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। इस शोध पत्र में आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय विधियों, आरेखों एवं मानचित्रों का प्रयोग किया गया है। सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिले की सन् 1991-2021 तक की दुग्ध उत्पादन की स्थिति के बारे में बताया गया है, जिसमें निरन्तर वृद्धि हुई है। इसमें सरस डेयरी की वितरण प्रणाली, बीएमसी की संख्या, संघ के सदस्यों की संख्या तथा डीसीएस की संख्या के बारे में भी बताया गया हैं जिले की दुग्ध की भण्डारण क्षमता का तहसील अनुसार वितरण एवं उस क्षमता का उपयोग करने की दृष्टि से भी वितरण को दर्शाया गया है। संघ द्वारा संचालित प्रोत्साहन हेतु विभिन्न योजनाओं एवं संघ द्वारा बनाये जाने वाले विभिन्न दूग्ध उत्पादों का भी वर्णन किया गया है। परिकल्पना परीक्षण के अनुसार सरस डेयरी से जुड़ने से पशुपालकों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। इस शोध पत्र के निम्न सुझाव है - संघ से सभी पशु पालकों को जोड़ना, गोबर का व्यवसायिक दृष्टि से प्रयोग करना व दूध की कीमतों में बढ़ोतरी करना आदि है।

संकेताक्षर : सरस डेयरी, श्वेत क्रांति, बीएमसी, पशुपालक, दुग्ध उत्पादक

प्रस्तावना

दुग्ध प्राचीनकाल से ही, जब से मानव सभ्यता पनपी है, तभी से यह मनुष्य के काम आ रहा है। यह भोजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। दूध के उत्पाद मक्खन का उल्लेख महाभारत काल में भगवान श्रीकृष्ण के समकालीन मिलता है। दूध दुधारू पशुओं से प्राप्त किया जाता है, जिसमें गाय, भैंस, बकरी, ऊँटनी आदि प्रमुख है। यह प्राथमिक व्यवसाय के मिश्रित कृषि का एक भाग है, परन्तु वर्तमान में व्यवसायिक दृष्टि से उत्पादन करने व मशीनीकरण के प्रयोग के कारण अब यह व्यवसाय की द्वितीयक श्रेणी में शामिल है। भारत में कृषि क्रियाओं में विशेषकर रबी की फसल की कटाई के बाद एक खाली समय होता है जब कृषकों के पास कोई काम नहीं रहता है। इसलिए फुरसत के समय के सदुपयोग और कृषि आय के सम्पूरण हेतु कृषि में कई कृषि से जुड़ी क्रियाओं को सम्पादित किया जाता है, इसलिए इससे जुडे हुए व्यवसाय पशुपालन पर ध्यान दिया जाता है।

भारत का दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है, जिसका श्रेय डॉ. वर्गीज कुरियन को जाता हैं, जिन्होंने श्वेत क्रान्ति चलाई। श्वेत क्रान्ति की शुरूआत 1970 ई. में वर्गीज कुरियन के निर्देशन में ऑपरेशन फ्लड-I योजना के समारम्भ से हुई। इसके अन्तर्गत देश के दस राज्यों में राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम शुरू किये गये।

ऑपरेशन फ्लड-2 (सन् 1979-85) के अन्तर्गत, जनपद और राज्य स्तर पर एक त्रिस्तरी सहकारी व्यवस्था अपनायी गयी। ऑपरेशन फ्लड-3, जिसका समापन अप्रैल, 1996 में हुआ है। इससे देश के 250 जिले लाभान्वित हुए। ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए आनन्द, मेहसाणा एवं पालनपुर (बनासकांठा) में शोध केन्द्र खोले गये है। श्वेत क्रान्ति की सफलता मुख्यतः दुधारू पशुओं की नस्ल में सुधार और नयी प्रौद्योगिकी के अपनाये जाने पर आधारित है। ग्रामीण सहकारी समितियों की इसमें सक्रिय भागीदारी रही हैं।

राजस्थान की प्राकृतिक परिस्थितियाँ जहाँ एक ओर कृषि के लिए अपेक्षाकृत प्रतिकूल रही है, वहीं पशुपालन के लिए अनुकूल हैं। राजस्थान का दुग्ध उत्पादन में देश में दूसरा स्थान हैं। राजस्थान में डेयरी उद्योग का प्रारम्भ 1971 में हुआ है। राजस्थान में भी श्वेत क्रांति चलायी गई।

तथा राजस्थान में "राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन **[RCDF]** की स्थापना हुई। जिससे दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हुई हैं। राजस्थान में लगातार हो रहे औद्योगिक विकास के फलस्वरूप दुग्ध व इसके उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही हैं जिसकी पूर्ति के लिए डेयरी उद्योग का विकास आवश्यक हो गया हैं।

सरस डेयरी चितौड़गढ की स्थापना चितौड़गढ-प्रतापगढ़ दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि. का पंजीकरण **10** जून **2008** को राजस्थान कॉपरेटिव सोसायटी एक्ट **1965** के अन्तर्गत हुई। दुग्ध संघ के कार्यक्षेत्र में चितौडगढ़ व प्रतापगढ़ जिले आते है। दुग्ध संघ के गठन के समय दुग्ध संघ द्वारा लगभग **20,000** किग्रा प्रतिदिन प्राइवेट आईस फैक्ट्रीयों, चितौड़गढ व छोटी सादड़ी में दुग्ध संकलन किया जाता था। इसकी स्थापना से पूर्व यहां का दूध टैंकर के माध्यम से भीलवाड़ा में जाता था। वर्तमान में इसका संयंत्र जिला मुख्यालय पर बोजुन्दा गांव में अवस्थित है। इसकी क्षमता **1,50,000** किग्रा है।

अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिचय

मानचित्र के अनुसार अध्ययन क्षेत्र चित्तौड़गढ़ जिला **24°13'** उत्तरी अक्षांश से **25°13'** उत्तरी अक्षांश तथा **74°04'** पूर्वी देशान्तर से **75°53'** पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित हैं। यह उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में आता है। यह राजस्थान के दक्षिणी भाग में उदयपुर संभाग का एक जिला है इसका क्षेत्रफल **7822** वर्ग किलोमीटर है। जो राज्य का **2.29** प्रतिशत है। शहरी क्षेत्रफल **149.86** वर्ग किमी व ग्रामीण क्षेत्रफल **7672.14** वर्ग किमी. हैं। इसकी सीमा पर उत्तर में भीलवाड़ा, दक्षिण में प्रतापगढ़ व नीमच (म.प्र.) पश्चिम में उदयपुर व राजसमन्द तथा पूर्व में कोटा व बूंदी अवस्थित है। यह जिला पूर्व-पश्चिम कोरिडोर व स्वर्णिम चतुर्भुज योजना के मिलन बिन्दु पर अवस्थित है। यह रेलमार्ग के भी संगम **(Junction)** पर अवस्थित है।

यहाँ की कुल जनसंख्या सन् 2011 की जनगणना के अनुसार 15,44,392 व्यक्ति है। जिसमें से 7,84,054 पुरूष व 7,60,338 महिलाएँ हैं। यहां की साक्षरता 54.04 प्रतिशत है। इस जिले में कुल 1,737 गाँव हैं। यहाँ की 81.53 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण व 18.47 प्रतिशत नगरीय है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

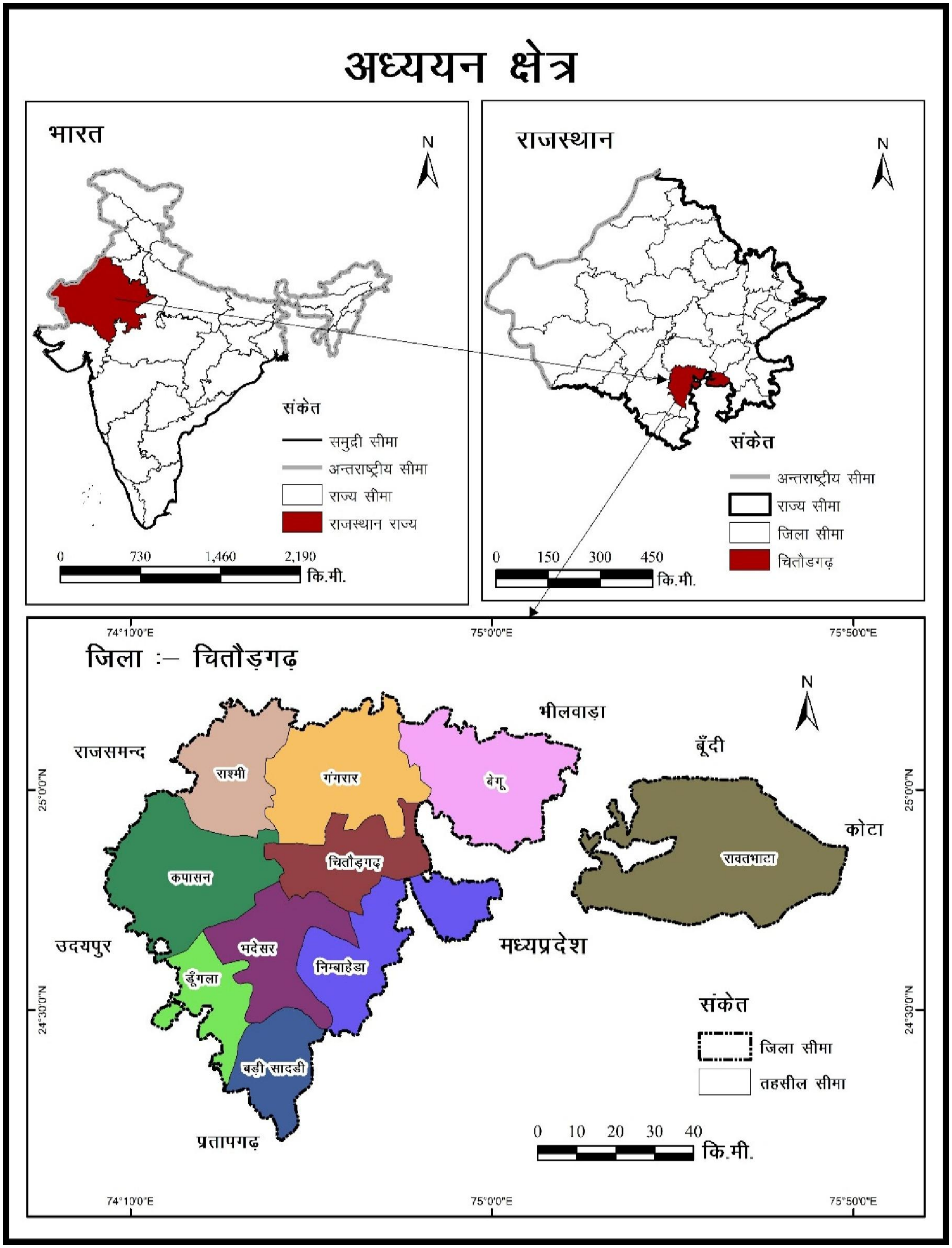

शोध के उद्देश्य

1. सरस दुग्ध उद्योग के विकास एवं स्थिति का अवलोकन करना।
2. दुग्ध उद्योग के भावी विकास की सम्भावना एवं सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पना

चित्तौड़गढ़ जिले में सरस डेयरी के विकास से दुग्ध उत्पादकों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

शोध विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में आवश्यक सूचनाओं एवं आंकड़ों का द्वितीयक स्तर पर संकलन किया गया है। इसमें प्राथमिक स्तर पर भी आंकड़ों का चयन किया गया है। द्वितीयक आकड़ों का संग्रह विभिन्न स्त्रोतों जैसे आर्थिक सर्वेक्षण, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जिला चित्तौड़गढ़ , डिस्ट्रीक्ट हैण्डबुक, 2011, वार्षिक प्रतिवेदन सरस डेयरी, चित्तौड़गढ़ आदि से सग्रहित किये गये।

इसमें आवश्यकतानुसार ग्राफ, टी-टेस्ट व **Arc GIS** से मानचित्र का प्रयोग किया गया।

अध्ययन क्षेत्र में दुग्ध उत्पादन की प्रग्रति/स्थिति (1991-21)

चित्तौड़गढ जिले में समयानुसार दूध उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है। क्योंकि समय के अनुसार निरन्तर जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। इससे नगरीकरण औद्योगिकीकरण को बढ़ावा मिल रहा है। जिससे दूध व इससे बने उत्पादों की मांग भी बढ़ती जा रही है। इस मांग की पूर्ति हेतु दूध का उत्पादन निरन्तर बढता जा रहा है। शिक्षा के प्रसार से जागरूकता बढ़ती जा रही है। इससे उन्नत नस्ल के पशुओं का क्रय किया जा रहा है व जिससे प्रति पशु दूध उत्पादन बढ़ रहा है। लोगों के पास रोजगार मिलने से जिले में आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है। जिससे लोग पूंजी को उपभोग पर भी खर्च कर रहे है। इससे भी दूध व इसके उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

तालिका के अनुसार जिले में सन् 1991-92 में सरस डेयरी द्वारा संकलित की गई दूध की मात्रा 10.44 लाख लीटर थी जो सन् 2021-22 में बढ़कर कुल 328.77 लाख लीटर हो गई अर्थात् 30 वर्षों में 3049.14% की बढ़ोतरी हुई। अर्थात् लगभग 31.49 गुना दुग्ध उत्पादन हो गया।

तालिका : चित्तौड़गढ़ जिले में डेयरी विकास कार्यक्रम की प्रगति

वर्ष	दुग्ध उत्पादन सहकारी समितियाँ	सदस्यों की संख्या	संकलित की गई दूध की मात्रा (लाख लीटर)
1991-92	154	7499	10.44
1996-97	107	8261	15.73
2001-02	334	12822	128.62
2006-07	601	24036	161.24
2011-12	753	29496	176.10
2016-17	933	44926	358.84
2021-22	1053	52950	328.77

स्रोत - जिला सांख्यिकीय रूपरेखा

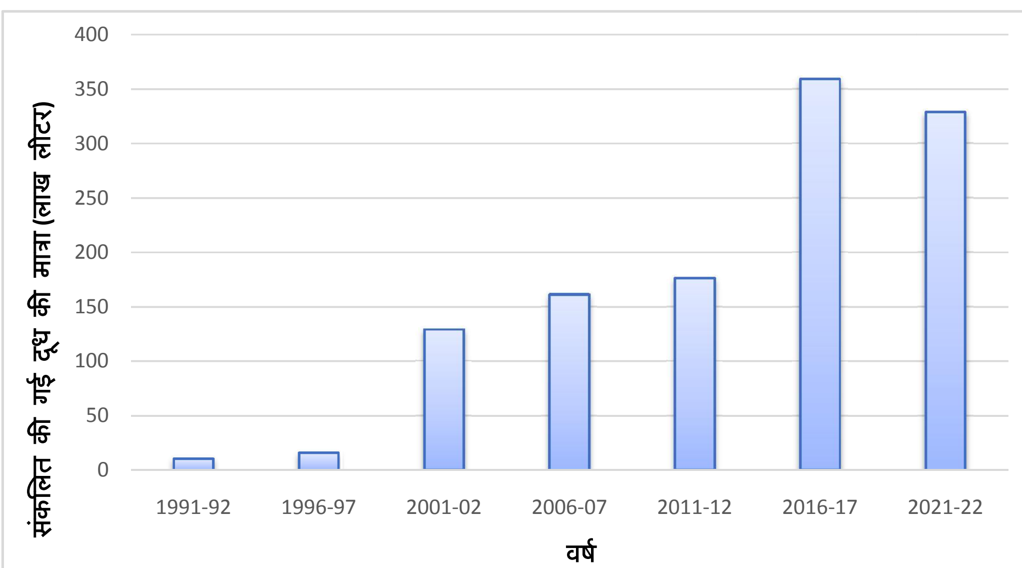

आरेख : चित्तौड़गढ़ जिले में डेयरी विकास कार्यक्रम की प्रगति

उक्त तालिका के अनुसार **1991-92** में संकलित की गई दूध की मात्रा **10.44** लाख लीटर थी। जो सन् **1996-97** में बढ़कर **15.73** लाख लीटर, सन् **2001-02** में **128.2** लाख लीटर, सन् **2006-07** में **161.24** लाख लीटर हो गई। सन् **2011-12** तके **176.10** लाख लीटर व **2016-17** में **358.34** लाख लीटर हो गई। सन् **2021-22** में **328.77** लाख लीटर रही।

तालिका के अनुसार सन् **1991-92** में कुल सदस्यों की संख्या **7499** थी जो सन् **1996-97** में **8261**, सन् **2001-02** में **12822** सन् **2006-07** में **34036** व सन् **2011-12** में **29496** व सन् **2016-17** में **44926** सदस्य बन गये। अर्थात् इसमें काफी तेजी से वृद्धि हुई है। वही सन् **2021-22** में **52950** सदस्य बन गये।

तालिका के अनुसार दुग्ध उत्पादन सहकारी समिति की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। जो निम्नानुसार है - सन् **1991-92** में कुल सहकारी समितियों की संख्या **154** थी। जो सन् **1996-97** में घटकर **107** व सन् **2001-02** में बढ़कर **334**, सन् **2006-07** में **601**, सन् **2011-12** में **713** एवं सन् **2016-17** में **933** व सन् **2021-22** में बढ़कर **1053** तक पहुंच गई।

अध्ययन क्षेत्र में सरस डेयरी की वितरण प्रणाली

सरस डेयरी द्वारा पशुपालकों से दूध खरीदा जाता है। इसके लिए गांव स्तर पर दुग्ध उत्पादक समिति का गठन करती है। जिसमें दूग्ध उत्पादकों को सदस्य बनाकर उनके दुग्ध खरीदती है। फिर दुग्ध उत्पादक समिति एकत्रित दुध को नजदीकी दुग्ध अवशीतन केन्द्र पर पहुंचाती है। लगभग **4-5** समितियों पर एक **BMC** स्थापित कर रखी है। ताकि कोल्ड चैन स्थापित हो सके। व दूध की गुणवत्ता बरकरार रहे एवं दूर-दराज के गांवों से भी दूध एकत्रित किया जा सके। फिर इन दुग्ध अवशीतन केन्द्रों में हमेशा इन्सुलेटेड टैंकरों के माध्यम से दूध को डेयरी सयन्त्र तक अतिशीघ्र पहुंचाया जाता है।

दुग्ध उत्पादक सदस्य → दुग्ध उत्पादन समिति → दुग्ध अवशीतन केन्द्र →
टैंकर → डेयरी संयत्र

सरस डेयरी के वर्तमान में सन् **2021-22** में कुल **52,950** सदस्य है, वही सहकारी समितियों की संख्या **1053** है। कुल दुग्ध अवशीतन केन्द्रों की संख्या **134** है तथा जिला मुख्यालय के पास जो बोजून्दा में डेयरी सयंत्र लगा हुआ है। जहां पर वर्तमान में दूध प्रतिदिन दुग्ध एकत्रित किया जाता है।

सरस डेयरी की वितरण प्रणाली नवम्बर, **2021** की सरस डेयरी की प्रगति रिपोर्ट से और स्पष्ट हो जाती हैं। जिसके अनुसार जिले में कुल **108** दुग्ध अवशीतन केन्द्र, **687** दुग्ध उत्पादक समितियाँ **DCS/CC** पायी गयी, समस्त दुग्ध अवशीतन केन्द्रों की कुल क्षमता **199000** लीटर थी। जिले में कुल दूग्ध उत्पादन **104,055** किग्रा/प्रतिदिन पाया गया। भण्डारण की कुल क्षमता का **52.29** प्रतिशत औसत उपयोग हो रहा था। तहसील अनुसार दूध का वितरण समझने के लिए निम्न सारणी का अवलोकन किया जाना आवश्यक है -

तालिका : नवम्बर माह, 2021 की रिपोर्ट

क्र.स.	तहसील का नाम	BMC की संख्या	DCS/CC की संख्या	BMC की क्षमता (लीटर)	दूध उत्पादन औसत प्रतिदिन किग्रा.	भण्डारण क्षमता का उपयोग %
1-	चित्तौड़गढ़	11	77	21000	8362	40%
2-	कपासन	33	189	57000	28722	50.39%
3-	निम्बाहेड़ा	11	74	21000	9994	47.59%
4-	राशमी	8	35	14000	5493	39.24%
5-	बड़ी सादड़ी	5	24	10000	3735	37.35%
6-	भदेसर	17	132	32000	22847	71.40%
7-	डूँगला	11	59	22000	9007	40.94%
8-	बेगूँ	5	42	9000	4412	49.02%
9-	रावतभाटा	1	7	2000	1150	58.09%

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

10-	गंगरार	6	48	11000	10333	93.94%
योग जिला चित्तौड़गढ़		108	687	199000	104055	52.29%

स्रोत : कार्यालय सरस डेयरी, चित्तौडगढ़, नवम्बर, 2021

उपरोक्त तालिका के अनुसार शोध क्षेत्र चित्तौड़गढ़ जिले में सरस डेयरी द्वारा दुग्ध संकलन को लेकर की गयी वितरण प्रणाली का उल्लेख किया गया है। यह सूचना सरस डेयरी के कार्यालय से प्राप्त की गई है। जिसमें नवम्बर, 2021 की जानकारी दी गई है। इसी माह के आधार पर उक्त वितरण का वर्णन किया गया है।

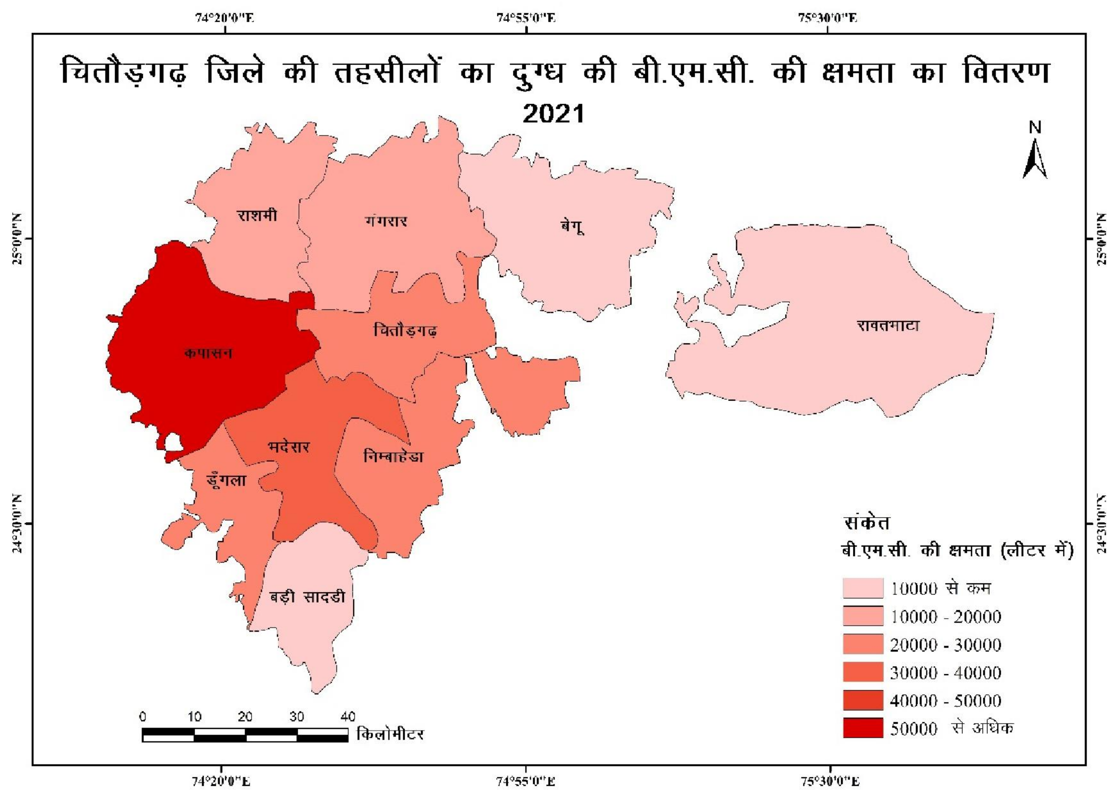

स्रोत : Arc GIS 10.8

मानचित्र

मानचित्र के अनुसार शोधक्षेत्र में दुग्ध अवशीतन केन्द्र (बी.एम.सी.) की विभिन्न तहसीलों में भण्डारण क्षमता को दर्शाया गया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

तालिका के अनुसार सर्वाधिक दूध संकलन कपासन तहसील से हो रहा है जहाँ से प्रतिदिन **28722** किग्रा दुध संकलित होता हैं। सर्वाधिक बीएमसी भी कपासन तहसील में ही है जिसकी संख्या **33** है। सर्वाधिक समितियाँ व बीएमसी की क्षमता के हिसाब से भी कपासन तहसील अग्रणी हैं। जिसका प्रमुख कारण इस तहसील में पशुपालन करने वाली जातियाँ जैसे - जाट, गाडरी, गुर्जर आदि अधिक संख्या में रहते हैं। दूध देने वाले पशुओं में प्रमुख भैंस होती है। जिनको जाट जाति के लोग अधिकांश पालते हैं और इस जाति का कपासन क्षेत्र में प्रभुत्व है। दूसरे स्थान पर भदेसर तहसील हैं जहां से प्रतिदिन **22,847** किग्रा दूध का संकलन होता है। इस तहसील में **17** बीएमसी व **132** दुग्ध उत्पादक समितियाँ व बीएमसी की कुल क्षमता **32,000** लीटर प्रतिदिन हैं। दूध संकलन के हिसाब से तीसरे स्थान पर गंगरार तहसील है। जहाँ से प्रतिदिन **10,333** किग्रा दूध संकलित होता हैं। जबकि यहाँ कि बीएमसी की कुल क्षमता भी **11000** लीटर प्रतिदिन है। गंगरार तहसील में भूमिगत जल व बेड़च नदी के कारण धरातलीय जल भी अच्छी मात्रा में उपलब्ध है। यहाँ पर **6** बीएमसी व **48** दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियाँ हैं। इसके बाद निम्बाहेड़ा तहसील का स्थान आता है। जहाँ पर **9994** किग्रा. दूध का संकलन प्रतिदिन होता है। यहाँ की बीएमसी की कुल क्षमता **21000** लीटर प्रतिदिन है। यहाँ पर **11** बीएमसी व **74** दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियाँ हैं। पाँचवे स्थान पर डूँगला तहसील है जहाँ से प्रतिदिन **9007** किग्रा. दूध प्रतिदिन संकलित होता है। यहाँ की बीएमसी की क्षमता **22000** लीटर प्रतिदिन हैं। यहाँ पर **11** बीएमसी व **59** दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियाँ है। अगले स्थान पर चित्तौड़गढ़ तहसील है जहाँ से प्रतिदिन **8362** किग्रा. दूध प्रतिदिन संकलित होता है। संयंत्र के सबसे नजदीक होने के बाद भी जिले में दूध संकलन के लिहाज से छठा स्थान है। जिसका प्रमुख कारण यह है कि यहाँ पर शहर नजदीक पड़ने के कारण प्राइवेट दूध वाले तथा स्वयं दुग्ध उत्पादक ही दूध को बाजार में सीधे ही बेच देते हैं। अर्थात् प्रतिस्पर्धा अधिक होने के कारण सरस डेयरी तक दूध कम आ पाता हैं यहाँ पर **11** बीएमसी व **77** दुग्ध उत्पादक समितियाँ हैं। बीएमसी की कुल क्षमता **21000** लीटर प्रतिदिन हैं। सातवें स्थान पर राशमी तहसील है। जहाँ से प्रतिदिन **5493** किग्रा दूध प्रतिदिन संकलित होता है। यहाँ कि बीएमसी की कुल क्षमता **14000** लीटर प्रतिदिन है। यहाँ पर कुल **8** बीएमसी व **35** दुग्ध उत्पादक समितियाँ हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

इनके अलावा कुछ तहसीलें ऐसी भी है जहाँ पर दुध संकलन काफी कम होता है जो निम्नानुसार है - बेगूँ तहसील जहाँ पर **4412** किग्रा. दूध प्रतिदिन संकलित होता है। यहाँ की बीएमसी की कुल क्षमता **9000** लीटर प्रतिदिन है एवं कुल बीएमसी की संख्या **5** व सहकारी दुग्ध उत्पादक समितियों की संख्या **42** है। इसके बाद नवें स्थान पर बड़ी सादड़ी तहसील है जहाँ पर **3735** किग्रा. दूध प्रतिदिन संकलित है। यहाँ पर **5** बीएमसी व **24** दुग्ध उत्पादक समितियाँ हैं। यहाँ की बीएमसी की कुल क्षमता **10,000** लीटर प्रतिदिन हैं। सबसे आखिरी स्थान पर रावतभाटा तहसील हैं जहां से प्रतिदिन केवल **1150** किग्रा दूध ही संकलित होता हैं। यहा पर केवल **1** बीएमसी व **7** दुग्ध उत्पादक समितियाँ हैं। बीएमसी की कुल क्षमता **2000** लीटर प्रतिदिन हैं। रावतभाटा में सरस डेयरी का सबसे कम विकास हुआ है। जिसका प्रमुख कारण यह है कि यहाँ पर ऊबड़-खाबड़ व पथरीला धरातल होने से तथा अधिकांशत् आदिवासी लोग रहने से दुग्ध व्यवसाय पर लोग कम ही ध्यान देते हैं। रावतभाटा, बेगूँ व बड़ी सादड़ी में भी सरस डेयरी का विकास अपेक्षाकृत कम हुआ है। जिसका प्रमुख कारक मुख्य संयंत्र से दूरी, अन्य प्राइवेट डेयरियों को दूध बेचना आदि हैं

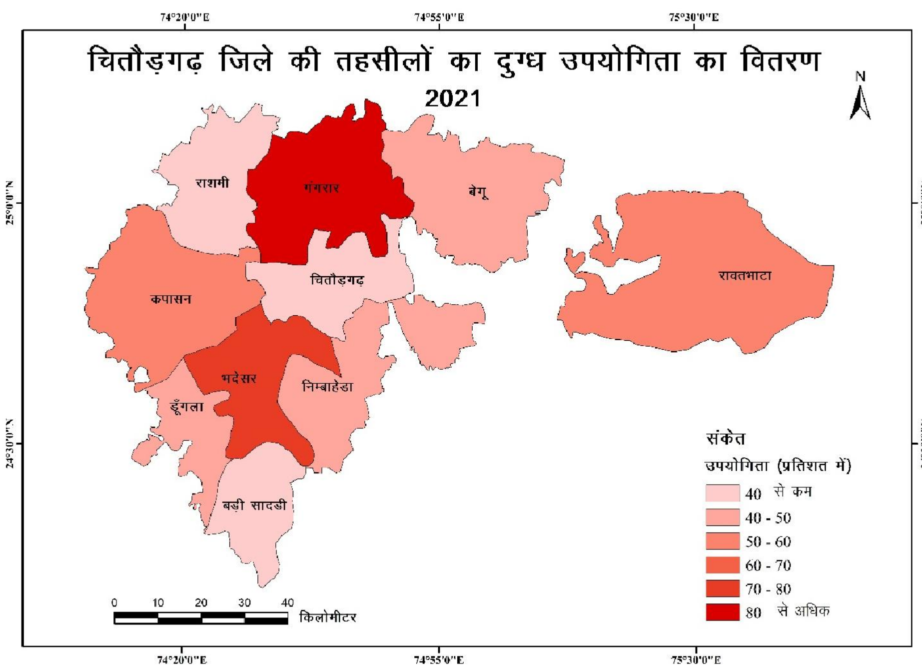

स्रोत : **Arc GIS 10.8**

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 6, May 2024

मानचित्र

जिले में दुग्ध भण्डारण क्षमता का तहसील अनुसार उपयोग करने की दृष्टि से अध्ययन निम्नानुसार हैं - जिले की कुल भण्डारण क्षमता का **52.29** प्रतिशत ही उपयोग प्रतिदिन हो पा रहा हैं। जिले की समस्त बीएमसी कुल भण्डारण क्षमता **199000** लीटर प्रतिदिन हैं जहाँ पर प्रतिदिन **104,055** किग्रा दूध ही संकलित हो रहा हैं। मानचित्र के अनुसार शोध क्षेत्र की तहसील अनुसार दुग्ध भण्डारण क्षमता की उपयोगिता का वितरण दर्शाया गया है। तहसील अनुसार देखा जाए तो सर्वाधिक उपयोग गंगरार तहसील में जहाँ पर **93.94** प्रतिशत क्षमता का उपयोग हो रहा हैं। जिसका प्रमुख कारण क्षेत्र में भूमिगत व धरातलीय जल प्रचुर मात्रा में है जिससे उन्नत तरीके से पशुपालन करके दूध को सरस डेयरी तक पहुँचा रहे हैं। दूसरे स्थान पर भदेसर तहसील है जहाँ पर कुल भण्डारण क्षमता का **71.40** प्रतिशत उपयोग हो रहा है। यहाँ पर भी वागन नदी व घोसुण्डा बाँध के कारण सिंचाई के लिए एवं पशुओं के लिए पर्याप्त भूमिगत जल उपलब्ध हैं। तीसरे स्थान पर रावतभाटा तहसील हैं। जहाँ पर कुल क्षमता का **58.0** प्रतिशत उपयोग हो रहा है। हालाँकि यहाँ पर केवल **1** ही बीएमसी हैं।

चौथे स्थान पर कपासन तहसील है जहाँ पर कुल भण्डारण क्षमता का **50.39** प्रतिशत उपयोग हो रहा है। यहाँ पर कृषक जातियाँ विशेषकर भैंस पालने वाली जातियाँ जैसे जाट अधिक रहती है, इसलिए उपयोग कर रही हैं। पाँचवे स्थान पर बेगूँ तहसील हैं। जहाँ पर कुल भण्डारण क्षमता का **49.02** प्रतिशत उपयोग हो रहा है। अगले स्थान पर निम्बाहेड़ा तहसील है जहाँ पर कुल भण्डारण क्षमता का **47.59** प्रतिशत उपयोग हो रहा हैं। इसके बाद डूँगला तहसील हैं जहाँ पर अपनी कुल भण्डारण क्षमता का **40.94** प्रतिशत उपयोग हो रहा है।

इसके अलावा अपनी भण्डारण क्षमता का बहुत कम उपयोग करने वाली तहसीलें निम्न है - चित्तौड़गढ़ जो कि कुल अपनी भण्डारण क्षमता का **40** प्रतिशत उपयोग कर पा रही है। इसके बाद राशमी जो कि अपनी क्षमता का **39.24** प्रतिशत उपयोग कर रही है। सबसे आखिरी स्थान पर बड़ी सादड़ी तहसील है जो कि अपनी कुल भण्डारण क्षमता का मात्र **37.35** प्रतिशत ही उपयोग कर रही है जिसका प्रमुख कारण अन्य प्राइवेट डेयरियों से प्रतिस्पर्धा हैं।

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 6, May 2024

सारांशत् यह कहा जा सकता है कि अपनी कुल भण्डारण क्षमता का सर्वाधिक उपयोग गंगरार व भदेसर तहसीलें कर रही है जिसका प्रमुख कारण यहाँ पर प्रचुर मात्रा में भूमिगत जल उपलब्ध हैं। जिससे उन्नत तरीके से पशुपालन में सुविधा रहती हैं। जबकि कपासन, बेगूँ, निम्बाहेड़ा में मध्यम स्थान पर हैं। चित्तौड़गढ़, राशमी व बड़ी सादड़ी तहसीलें अपनी क्षमता का बहुत ही कम उपयोग कर पा रही हैं। जिसकी मुख्य वजह अन्य प्राइवेट दूध डेयरियों व निजी दूध विक्रेता से प्रतिस्पर्धा हैं। जिससे सरस डेयरी पर कम मात्रा में दूध आ पाता हैं। चित्तौड़गढ़ तहसील का स्वयं जिला मुख्यालय शहर होने के कारण बाजार में खपत हो जाती है। राशमी का दूध गोकूल डेयरी के द्वारा भीलवाड़ा तथा बड़ी सादड़ी का दूध उदयपुर ले जाया जाता हैं।

शोध क्षेत्र में दुग्ध वितरण केन्द्रों को प्रोत्साहन के प्रयास

चितौड़गढ जिले में दुग्ध वितरण केन्द्रों को प्रोत्साहन के अनेक प्रयास किए जा रहे है। निजी दूध वाले निजी डेयरियों वाले दूध के भाव में बढ़ोतरी करके सरस डेयरी से प्रतिस्पर्धा कर रहे है। जबकि सरस डेयरी अपने वितरण केन्द्रों को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम संचालित कर रहा है जो निम्नानुसार है -

1. समितियों का सुदृढ़ीकरण
2. कोल्ड चैन स्थापित करना
3. कृषक संगठन गतिविधियों का संचालन

सरस लाडली योजना

किसान केसरी योजना

सचिव कल्याण कोष योजना

पशुओ में टीकाकरण

मिनरल मिक्सचर

कृमि नाशक_बोलस

पशु चिकित्सा एवं बाझंपन निवारण केम्प का आयोजन

आगजनी पर अंशदान

कुट्टी मशीन पर अनुदान

प्रसूति उपहार योजना

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

मुर्रा पाडा अनुदान

पशु आहार

हरा चारा बीज

सरस डेयरी द्वारा दुग्ध उत्पादित वस्तु के प्रकार

सरस डेयरी चितौडगढ़ द्वारा अपने द्वारा खरीदे गये दूध से अनेक प्रकार के उत्पाद बनाता है। जो निम्नानुसार है - यह संघ गुजरात व अन्य क्षेत्रों में पैक्ड दुग्ध की बिक्री करता है। तथा उपभोक्ताओं की मांग पर चाय/कॉफी के लिए चाय साथी दूध भी बाजार में उपलब्ध करा रहा है। इसके अलवा दुग्ध संघ में घी, पनीर, मावा, दही कप, छाछ, श्रीखंड व गुंजिया पेडे का निर्माण होता है। तथा अन्य उत्पाद जैसे बटर, फ्लेवर्ड मिल्क व आइसक्रीम अपने समीपवर्ती दुग्ध संघ भीलवाड़ा/उदयपुर से तथा बीकानेर दुग्ध संघ से गाय का घी, सोहन पपड़ी, रसगुल्ले व गुलाबजामुन लाकर उपलब्ध कराये जा रहे है।

परिकल्पना परीक्षण

चित्तौड़गढ़ जिले में दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की सदस्यता लेने से दुग्ध उत्पादन की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

तालिका : दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की सदस्यता तथा आर्थिक स्थिति

दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ सदस्य	N	माध्य	माध्य विचलन	टी-मान	स्वतंत्र कोटि	पी-मान	निष्कर्ष
हाँ	72	3.25	0.44	4.359	238	0.000	***
नहीं	168	3.06	0.24				

स्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 6, May 2024

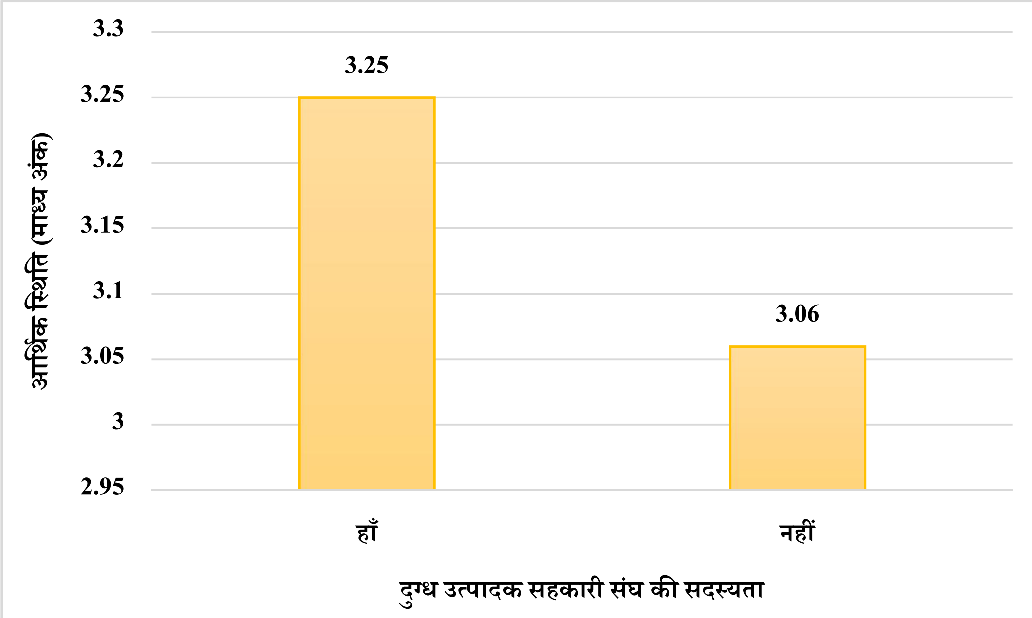

आरेख : दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की सदस्यता तथा आर्थिक स्थिति

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए शोध क्षेत्र चितौड़गढ जिले में दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के सदस्यो एवं गैर सदस्यों की आर्थिक स्थिति को जानने के लिए लिकर्ट महोदय की पांच बिन्दू मापनी पर उत्तरदाताओं से पूछा गया कि उनकी आर्थिक स्थिति में किस हद तक सुधार हुआ है। उनके द्वारा दिए गए उत्तर को **1** से **5** तक अंक दिए गए। **1** अंक बताता है कि बहुत ही कम अथवा नगण्य और **5** अंक दर्शाता है अत्यधिक सुधार हुआ है। उत्तरदाताओं द्वारा दिए गए उत्तर को दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के सदस्यों तथा सहकारी संघ के गैर सदस्यों में दो ग्रुप में विभाजित किया गया और उनके माध्य अंक की तुलना की गयी।

दोनों की आर्थिक स्थिति के माध्यों की तुलना का परीक्षण किया गया जो तालिका के अनुसार है। (**t**=4.359, **p**<0.001) परीक्षण के परिणाम यह दर्शाते है कि दोनों के मध्य उच्च सार्थक अन्तर है। अतः दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के सदस्यों की आर्थिक स्थिति गैर सदस्यों से बेहतर है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र में समयानुसार दूध उत्पादन की मात्रा में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसका श्रेय श्वेतक्रांति के जनक डॉ. वर्गीज कुरियन को जाता है। चित्तौड़गढ़ जिले में सन् **1991-92** में मात्र **10.44** लाख लीटर का उत्पादन हुआ जो सन् **2021-22** में बढ़कर **328.77** लाख लीटर हो गया। दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों की संख्या सन् **1991-92** में **154** थी जो सन् **2021-22** में बढ़कर **1053** हो गयी। सरस डेयरी की दुग्ध संकलन की दृष्टि से कपासन तहसील अग्रणी पायी गयी। इस तहसील में भण्डारण क्षमता भी सर्वाधिक पायी गयी। जबकि भण्डारण क्षमता का उपयोग करने की दृष्टि से जिले में गंगरार तहसील सबसे अग्रणी पायी गयी। कुल जिले की मात्र **52.29** प्रतिशत भण्डारण क्षमता का ही उपयोग हो पा रहा है। दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ चला रही है एवं विभिन्न पकार के दुग्ध उत्पादों को बनाया जा रहा है। संघ से जुड़ने पर पशुपालकों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। संघ को शोध क्षेत्र में जागरूकता फैलाकर सभी पशुपालकों को इससे जोड़ना चाहिए। सरस डेयरी के संयंत्र की क्षमता को बढ़ाकर जिले के सभी पशुपालकों के दूध को खरीदकर लाभान्वित करना चाहिए। इससे पशुपालकों को भी लाभ होगा एवं जिले के उपभोक्ताओं को शुद्ध उत्पाद मिल सकेंगे, जिससे क्षेत्र का विकास हो सकेगा।

सुझाव

शोध क्षेत्र में पशुपालकों को दूध व्यवसाय के साथ-साथ पशुओं के गोबर का भी व्यावसायिक दृष्टि से जैविक खाद बनाकर बेचना चाहिए या फिर खुद के खेतों में जैविक खाद का ही प्रयोग करना चाहिए। गायों के मूत्र से विभिन्न प्रकार के कीटनाश बनाने चाहिए। ताकि उनकी आय में वृद्धि हो सकें

शोध क्षेत्र चितौडगढ़ जिले में अवलोकन एवं प्राथमिक आंकड़ों के संग्रहण के दौरान यह देखने में आया कि जिले में सीमान्त क्षेत्रों का दूध अन्य जिलों (जैसे - उदयपुर, भीलवाड़ा, कोटा व नीमच आदि) में बेचा जाता है। जबकि चितौड़गढ़ जिले में बाहर से दुग्ध से निर्मित उत्पादों को मंगवा कर पूर्ति की जाती है। अतः जिले के दुग्ध उत्पादक संघ को सीमान्त क्षेत्र में विशेष रूप से ध्यान देकर

उनको जिले में ही विभिन्न आकर्षक योजनाओं के माध्यम से दूध बेचने हेतु प्रोत्साहित किया जावे। जिससे क्षेत्र में सरस दुग्ध उद्योग का विकास हो सके।

शोध क्षेत्र में अवलोकन में यह देखा है कि दुग्ध उत्पादक संघ से केवल बड़े पशुपालक एवं शिक्षित पशुपालक ही जुड़ पाये है। छोटे पशुपालक एवं अशिक्षित पशुपालक नहीं जुड़ पाये है। अतः दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ को क्षेत्र में जागरूकता फैलाकर अशिक्षित एवं छोटे पशुपालकों को भी जोड़ा जाए।

दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की विभिन्न योजनाओं का लाभ सीधे पशुपालकों तक पहुंचे इसके लिए प्रबंधन को प्रयास करने की जरूरत है। क्योंकि जागरूकता के अभाव में सभी को लाभ नहीं पहुंच रहा है।

शोध क्षेत्र में अपनी भण्डारण क्षमता के उपयोग करने की दृष्टि से गंगरार तहसील सबसे अग्रणी है। अतः यहां पर और अधिक **BMC** खोलने की जरूरत है। जबकि बड़ीसादड़ी, राशमी व डूंगला जैसी सीमान्त तहसीलें में उत्पादित दूध को सरस डेयरी द्वारा खरीदने हेतु आकर्षक उपाय किए जाने चाहिए।

जिले में **BMC** की भण्डारण क्षमता का केवल **52.29** प्रतिशत ही उपयोग हो पा रहा है। इसलिए संयंत्र की क्षमता बढ़ाकर के प्रसंस्करण क्षमता को और अधिक बढ़ायी जाए एवं प्राइवेट डेयरियों के पास जाने वाले दूध को खरीदा जाए इससे सरस डेयरी को लाभ होगा।

शोध क्षेत्र में दूध की कीमतों में बढ़ोतरी की जाए ताकि दूध उत्पादकों को लाभ मिल सके। वर्तमान में केवल लागत की भरपाई ही हो पा रही है।

सरकार के द्वारा सभी पशुपालको को ऋण सुविधा एवं अनुदान आसानी से उपलब्ध करवाये जाये ताकि दूध उत्पादन की मात्रा में वृद्धि की जा सके।

बन्द बड़ी दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ की समितियों को वापस चालू किया जाए एवं महिला सोसायटी से जोड़कर **BMC** खोली जाए।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 6, May 2024

शोध क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान देखा गया कि लगभग एक तिहाई दूध उत्पादक ही अपने दूध को सरस डेयरी पर बेचते है। अतः अन्य दो तिहाई वंचित दूध उत्पादकों को भी सरस डेयरी से जोड़ने के लिए सरस डेयरी का सभी गांवो तक विस्तार किया जाए एव विभिन्न आकर्षक योजनाओ के माध्यम से जोड़ा जाए।

सरस डेयरी के प्रबन्धन को सरस डेयरी की विभिन्न योजनाओं को प्रत्येक गांव एवं प्रत्येक पशुपालक तक पहुंचाने की जरूरत है।

सर्वेक्षण में देखा गया है कि उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति सरस डेयरी की सदस्यता लेने से कुछ हद तक मजबूत हुई है। इसलिए संघ की सदस्यता से वंचित पशुपालकों को संघ की सदस्यता लेने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. **जिला सांख्यिकीय रूपरेखा जिला चित्तौड़गढ़, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर - 1997, 2000, 2005, 2009, 2013, 2016, 2018**
2. **Jakhar, Dinesh. (2016). Economic Analysis of Milk Production and Marketing in Bhilwara district, Udaipur.**
3. **कार्यालय, सरस डेयरी, चितौड़गढ़**
4. **Dairying in Rajsathan : A statistical Profile 2016 National Dairy Development Board, Anand (Raj.)**
5. **Ameta, B.P. (2005) : "Dynamics of Dairy Entermise in Kota District". Geographical Aspects, Vol. VI, PP. 140-143**
6. **बुनियादी पशुपालन सांख्यिकी 2023 रिपोर्ट, पशुपालन मंत्रालय, भारत सरकार**
7. **नागर, कैलाशनाथ (1993). सांख्यिकी के मूल तत्व, मिनाक्षी प्रकाशन, आगरा.**
8. **सक्सेना, एच.एम. (2014). राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर**

9. Sharma, P. (2017). "Regional Dispanties in Infrastructure Development : A Comparative Study of Chittogarhnd Bhilwara Districts of Rajasthan, Udaipur, MLSU, PP. 45 &46
10. Government of India (2016&17): A Research Report of Basic Animal Husbandary Statistics, New Delhi; Department of Animal Husbandary and Dairying, Ministry of Agriculture.
11. शर्मा एन्. उदयपुर डेयरी व स्टडी इन इनडस्ट्रीयल ज्योग्राफी, उदयपुर, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, 1985
12. Deshmukh, M.S. (2014): Growth and Performance of Dairy Sector in India, Shivaji University, Kolhapur, Voice of Research, Vol. 31, 2 September, 2014.
13. Toosten Hemme (2013): Overview of Milk Prices and Production Costs World-wide, Germany: IFCNResearchCenter.
14. Government of India (2012-13): National Dairy Development Report (NDDB); Annual Report. Kannan E. Birthal PS Effect of Trade Liberalization on the Efficiency of Indian Dairy Industry, Journal of International & Area Studies, 17: 2010.